संशोधित शोध प्रारूप

अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं में सशक्तीकरण का एक अध्ययन (जयपुर शहर के विशेष संदर्भ में)

A Study of Empowerment of Working Women among Scheduled Tribe (With special reference to Jaipur City)

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर को पी.एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

(सामाजिक विज्ञान संकाय)

2017

शोध निर्देशक

डॉ. प्रताप पिंजानी

विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग

सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय

महाविद्यालय, अजमेर

शोधार्थी

देवकी मीणा

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग

सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय

महाविद्यालय, अजमेर

Scanned by CamScanner

APPENDIX - IV-A

Format for Outline (Synopsis) of Proposed Research work

(to be supplied in Four copies)

(Reference Ord. 124.11)

1. Nameof Scholar (In English) DEVAKI MEENA

(In Hindi') देवकी मीणा

2. Title of the Research Work :

(In English) A Study of Empowerment of Working Women among Scheduled Tribe (With Special reference to Jaipur City

(In Hindi) अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं में सशक्तीकरण का एक अध्ययन (जयपुर शहर के विशेष संदर्भ में)

3. Location

a. Institution/Department where the work is to be done S.P.C. Govt. College, Ajmer.

b. Geographical area of investigation, if any. Jaipur City

4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objective. Pg. No. → 1 - 8

5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study.) Pg. No. → 9 - 13

6. Research Gaps identified in the proposed field of investigation. (Based onthe review) Pg. No. → 14

7. Major Hypothesis, if any Pg. No. - 15

8. Research methodology. Pg. No. 15 - 17

9. List of references cited. Pg. No. 18 - 21

Meena 7/7/18

Signature of the Candidate with date

Outline Approved

9.07.2018

Dr. Pratap Singh

Name and Signature of supervisor with date & seal.

Head

Department of Sociology

Government College, Ajmer

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध का परिचयः–

(Introduction of proposed Research)

भारतीय समाज में लगभग आधी आबादी महिलाओं की है। जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं के योगदान को स्वीकार किया गया है। महिलाओं का राष्ट्र के विकास में उतना ही महत्व है जितना पुरूषों का है। वर्तमान में भारतीय समाज में महिलाएँ विकास और आधुनिकता की ओर बढ़ रही है। लेकिन समाज में आम महिला की यह वास्तविकता नहीं है। प्राचीन भारत में महिलाओं की समाज में प्रतिष्ठा ऊँची थी लेकिन समय बीतने के साथ विभिन्न कारणों से समाज में उनकी प्रतिष्ठिा घटने लगी। वर्तमान में भारतीय समाज में पुरूष की तुलना में महिलाएँ अधिक उपेक्षित, कमजोर, असहाय स्थिति में है अतः परिवार, राष्ट्र, समाज के सम्पूर्ण विकास के लिए महिलाओं को सशक्त करना आवश्यक है।

वर्तमान में भारतीय समाज में महिलाओं के सशक्तीकरण हेतु अनेक प्रयास किये जा रहे है लेकिन ये प्रयास तभी सफल होंगे जब हमें समाज के प्रत्येक वर्ग की महिलाओं की वास्तविक स्थिति का ज्ञान हो। प्रस्तुत शोध समाज की "अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं में सशक्तीकरण का अध्ययन" को ध्यान में रखते हुए किया जायेगा। शोध में अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं के सशक्तीकरण के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया जायेगा और यह देखा जायेगा कि परिवार, समाज में उनकी प्रस्थिति और भूमिका में क्या परिवर्तन आ रहे है और साथ ही उनके सशक्तीकरण के मार्ग में आ रही बाधाओं का अध्ययन किया जायेगा।

अनुसूचित जनजाति (Scheduled Tribe)

भारत एक विविधताओं वाला देश है यहाँ अनेक भाषा, धर्म, जाति, प्रजाति, सम्प्रदाय, संस्कृति के लोग निवास करते है। भारत की भौगोलक विविधताओं के कारण यहाँ अनेक जनजातियाँ निवास करती है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश की कुल आबादी में जनजातियों का प्रतिशत 8.2 है वहीं राजस्थान में यह प्रतिशत 12.6 है। जनजाति को अन्य नामों– वनवासी गिरिजन, आदिवासी आदि नामों से भी जाना जाता है। आदिवासी

Scanned by CamScanner

भारत के मूल निवासी रहे है। इनका भारतीय सामाजिक व्यवस्था में विशेष स्थान रहा है। प्रारभ से ही जनजातियाँ जगलों, वनों, दूरस्थ स्थानों में निवास करती रही है। जिसके कारण ये विकास की मुख्यधारा में समिमलित नहीं हो पाई है लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात संविधान में इन अनुसूचित जनजाति समूहों को कुछ संवैधानिक सुरक्षाऐं तथा सुविधाऐं प्रदान की गई है जिससे इनका समुचित विकास किया जा सकें।

अनुसूचित जनजाति का अर्थ :–

भारत के संविधान के अनुच्छेद 366(25) अनुसूचित जनजातियों को उन समुदायों के रूप में संदर्भ करता है जिन्हें संविधान के अनुच्छेद 342 के अनुसार अनुसूचित किया गया है। संविधान के अनुच्छेद 342 के अनुसार अनुसूचित जनजातियाँ वे आदिवासी या आदिवासी समुदाय या इन आदिवासियों और आदिवासी समुदायों का भाग, या उनके समूह है जिन्हें राष्ट्रपति द्वारा एक सार्वजनिक अधिसूचना द्वारा अनुसूचित जनजाति की तालिका में सम्मिलित किया गया है।

जनजाति की परिभाषा :–

मजूमदार के अनुसारः– कोई जनजाति परिवारों तथा परिवारों के ऐसे समूह का संकलन होता है जिसका एक सामान्य नाम होता है, जिसके सदस्य एक निश्चित भू–भाग पर निवास करते है, समान भाषा बोलते है तथा विवाह, व्यवसाय या उद्योग के विषय में कुछ निश्चित निषेधात्मक नियमों का पालन करते है और पारस्परिक कर्तव्यों की निश्चित व्यवस्था को मानते है। साधारणतया जनजाति अन्तर्विवाह के सिद्धान्त के अन्तर्गत विवाह करते है।

हॉबल के अनुसारः– एक जनजाति एक सामाजिक समूह है, जो एक विशेष भाषा बोलता है तथा एक विशेष संस्कृति रखता है जो इन्हें दूसरे जनजाति समूहों से अलग करती है। यह अनिवार्य रूप से राजनैतिक संगठन नहीं हो।

Scanned by CamScanner

अनुसूचित जनजाति के आधार :–

भारत में वर्तमान में अनुसूचित जनजातियों की संख्या लगभग 700 है। राजस्थान में जनजातियों को प्रमुख रूप से 12 अनुसूचित जनजातियों तथा उनकी उपजनजातियों में बांटा जा सकता है। राजस्थान की इन अनुसूचित जन जातियों में मीणा, भील, डामोर, गरासियां, सहरिया प्रमुख है। किसी समुदाय को अनुसूचित जनजाति में सम्मिलित करने हेतु कुछ आधार महत्वपूर्ण है। जिनमें कुछ निम्न प्रकार है:–

1. आदिम लक्षण
2. विशिष्ट प्रकार की सांस्कृतिक विशेषतायें
3. आर्थिक पिछडापन
4. भौगोलिक पृथकरण
5. समाज के एक बडे भाग से सम्पर्क में कठिनाई

महिला सशक्तीकरण (Women Empowerment)

सामाजिक संरचना में नारी की सहभागिता पुरूषों के समान ही आवश्यक है। सृष्टि का सृजन एवं संचालन दोनों महिलाओं के बिना सम्भव नहीं है। समाज में महिलाओं की स्थिति जितनी मजबूत होगी समाज व राष्ट्र उतना ही विकसित और प्रभावपूर्ण होगा। महिलाओं को सशक्त बनाना वर्तमान समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है क्योंकि विभिन्न कारणों यथा लिंग आधारित भेदभाव, अशिक्षा, यौन उत्पीडन, आर्थिक पराधीनता तथा राजनैतिक एवं प्रशासनिक शक्ति की न्यूनता आदि विभिन्न कारणों से महिलाओं को समाज में उचित स्थान प्राप्त नही हुआ है। महिला सशक्तीकरण को विश्व के सभी समाजों में स्त्री–पुरूष भेदभाव को दूर करने का महिलाओं को समाज में उचित स्थान दिलाने के महत्वूपर्ण साधन के रूप में देखा जा सकता है।

महिला सशक्तीकरण की परिभाषा:–

अन्तर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन (नैरॉबी 1985) के अनुसार ''महिला सशक्तीकरण से तात्पर्य महिलाओं को पुरूषों के बराबर वैधानिक, राजनीतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में उनेक परिवार, समुदाय, समाज एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वायत्ता है।''

Scanned by CamScanner

सशक्तीकरण का सर्वप्रथम आयाम है आत्मविश्वास और स्वाभिमान और इसी पर आधारित है समाज में सम्मानजनक स्थान। सशक्तीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शक्तिहीन लागों को अपने जीवन की परिस्थितियों को नियंत्रित करने का बेहतर अवसर मिल जाते है। इसका तात्पर्य केवल संसाधनों पर बेहतर नियंत्रण ही नही है बल्कि आत्म विश्वास में वृद्दि तथा पुरूषों के साथ बराबरी के आधार पर निर्णय करने की क्षमता से है। महिला सशक्तीकरण का तात्पर्य सामाजिक्‍क सुवधिाओं की उपलब्धता, राजनैतिक और आर्थिक नीति निर्धारण में भागीदारी, समान कार्य के लिये समान वेतन, कानून के तहत सुरक्षा और प्रजनन अधिकारों आदि से है। महिला सशक्तीकरण के माध्यम से ही महिलाओं के लिए सामाजिक न्याय और पुरूष महिला समानता का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

महिला सशक्तीकरण के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि महिलाओं को विभिन्न अवसरों की समानता मिले और साथ ही उनके काम को समाज की स्वीकृति भी मिले। चूँकि हमारे. समाज में उपस्थित सामाजिक धार्मिक मान्यताओं, परम्पराओं, अवधारणाओं, प्रथाओं आदि के कारण स्त्री पुरूष के लिए परिवार, जीवन, कार्य, व्यापार आदि के लिए अलग-अलग मानदण्ड लागू किये गये है। अतः महिला सशक्तीकरण के लिए आज आवश्यकता इस बात की है कि स्त्री व पुरूषों के मानदण्ड तय करते समय समानता की भावना रखी जाये तथा उसे सच्चे अर्थों में सम्पूर्ण समाज के द्वारा सवीकार भी किये जायें।

महिला सशक्तीकरण के मानक :–

1. महिलाओं में आत्मसम्मान तथा आत्मविश्वास की भावना का विकास करना।
2. महिलाओं में निर्णय लेने की दृढ़ता का विकास करना।
3. आर्थिक स्वावलम्बन एवं तकनीकी रूप से आत्मनिर्भर बनना।
4. महिलाओं के प्रति समाज में सकारात्मक, सहयोगात्मक, सम्मानजनक सोच का निर्माण।
5. महिलाओं में आत्मआलोचनात्मक चिन्तन क्षमता को विकसित करना।
6. महिलाओं में अपने अधिकारों के क्रियान्वयन को प्राप्त करने के लिए स्वयं प्रयास करना।

Scanned by CamScanner

7. महिलाओं की समाजिक, राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित कर परिवर्तन तथा निर्णय निर्माण की प्रक्रिया में सहभागिता बढ़ाना।

कामकाजी महिलाएँ (Working Women):-

वर्तमान में परिवर्तन की विभिन्न प्रक्रिथाओं जैसे–आधुनिकीकरण, नगरीकरण, औद्योगिकीकरण, पश्चिमीकरण आदि के प्रभाव के फलस्वरूप महिलाएँ घर की चारदीवारी से बाहर निकल रही है और साथ ही वे विभिन्न परम्परागत बंधनों से मुक्त होकर व्यावसायिक क्षेत्रों में प्रवेश कर रही है। इस प्रक्रिया से उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिला है।

अर्थ :–कामकाजी महिलाओं में उन महिलाओं को सम्मिलित किया जाता है जिनके शारीरिक या मानसिक श्रम से कोई आर्थिक रूप का उत्पादन कार्य सम्पन्न होता है अथवा जो वेतन वाले काम धन्धों में लगी हुई है। काम करने का अर्थ स्वयं काम करना ही नही है बल्कि दूसरे व्यक्तियों से काम लेना तथा उनके कार्य की निगरानी करना एवं निर्देशन आदि देना भी है। कामकाजी महिलाएँ नियमित रूप से घरों से बाहर आर्थिक व व्यावसायिक गतिविधियों में व्यस्त रहती है।

अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाएँ एवं सशक्तीकरण :–

जनजाति में प्रचलित परम्पराओं, प्रथाओं, प्रथागत कानूनों आदि के प्रभाव के कारण अनुसूचित जनजाति की महिलाओं की प्रस्थिति अच्छी नहीं रही है। अज्ञानता तथा अशिक्षा के कारण जनजातीय समाज में बीमारियों का इलाज जादू टोना, भोपा, मंत्र–तंत्र, अंधविश्वास आदि में ढूंढा जाता है जिसका अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के स्वास्थ्य पर विपरित प्रभाव पड़ता है। निरक्षरता के कारण जनजातीय महिलाएँ सरकार द्वारा प्रदत सुविधाओं तथा विभिन्न संस्थाओं से पूर्ण लाभ प्राप्त करने में सक्षम नहीं है।

Scanned by CamScanner

शिक्षा के निम्न स्तर से अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के सामाजिक, सांस्कृतिक विकास में निम्नता आती है जिसके फलस्वरूप वे कई प्रकार के शोषण का शिकार होती है। चूँकि परिवर्तन प्रकृति का नियम है अतः विभिन्न परिवर्तनों के प्रभाव के फलस्वरूप अनुसूचित जनजाति की महिलाएँ सशक्तीकरण की दिशा में आगे बढ रही है।

महिला सशक्तीकरण के लिए सर्व प्रमुख आवश्यकता एक महिला को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना ताकि वह स्वयं अपने बलबूते पर संबंधित अधिकारों का प्रयोग कर सके जनजातीय क्षेत्रों की आर्थिक गतिविधियों के अध्ययन से पता चलता है कि अनुसूचित जनजातीय महिलाएँ प्रारम्भ से ही विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। कृषि कार्य में बुआई, सिंचाई, पशुपालन, लकड़ी बीनकर लाना आदि अनुसूचित जनजातीय महिलाओं के दैनिक जीवन का अंग है। अनुसूचित जनजातीय महिलाओं को विभिन्न सुविधाओं एवं सुरक्षाओं जैसे– शैक्षिक छात्रवृत्तियों, पंचायती राज में आरक्षण, सरकारी नौकरी में आरक्षण आदि के कारण शिक्षा व रोज़गार के विभिन्न अवसर मिलने लगे है। जिसके फलस्वरूप वे अब घर की चार दीवारी से बाहर निकलकर जीविकोपार्जन हेतु कार्य करने लगी है। इससे अनुसूचित जनजातीय महिलाओं की सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई है और उन्हें अभिव्यक्ति की आजादी मिली है। आर्थिक स्वावलम्बन कारण उनमें आत्मनिर्भर बनने का अहसास बढा है और उन्होंने परम्परागत व रूढ़ीगत विचारों, मूल्यों का विरोध करना प्रारम्भ किया है।

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध का महत्व एवं आवश्यकता :–

(Need and importance of proposed Research):-

किसी भी राष्ट्र के सम्पूर्ण विकास के लिये सभी आयु, लिंग, वर्ग एवं जाति के लोगों की विकास की प्रक्रिया में भागीदारी सुनिश्चित की जानी आवश्यक है। इसके लिये महिलाओं के सशक्तीकरण से अधिक प्रभावी तरीका कुछ नही हैं। चूँकि जनजातियाँ भारतीय सामाजिक संरचना एवं संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं अतः सम्पूर्ण समाज के विकास के लिये अनुसूचित जनजाति की महिलाओं का विकास किया जाना आवश्यक है क्योंकि विभिन्न कारणों से ये सभ्यता से अत्यधिक दूर तथा अधिक पिछड़ी हुई स्थिति में है।

स्वत्रतंत्रा के पश्चात संविधान में विशेष सुविधाओं, सुरक्षाओं, विभिन्न बुद्धिजीवियों, विभिन्न संस्थाओं, अनेक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिवर्तन के कारण अनुसूचित जनजाति में परिवर्तन आया है। इन परिवर्तनों का प्रभाव अनुसूचित जनजाति की महिलाओं पर भी पड़ा है। अनुसूचित जनजाति की महिलाएँ किस प्रकार सशक्तीकरण की प्रक्रिया में सहभागी बन रही है इस पर समाजशास्त्री दृष्टिकोण से शोध किया जाना आवश्यक है। विभिन्न प्रशासनिक योजनाओं द्वारा जनजातीय विकास के लिए प्रयास किये जा रहे है। इन विभिन्न प्रयासों के फलस्वरूप अनुसूचित जनजाति की महिलाओं में शिक्षा के स्तर में वृद्वि हुई है। शिक्षा का स्तर बढने से उनको रोजगार के विभिन्न अवसर प्राप्त हुये है। वे विभिन्न निजी एवं सरकारी क्षेत्रों में कामकाजी महिला के रूप में काम कर रही है। इससे उनकी सामाजिक प्रस्थिति में किस प्रकार परिवर्तन आ रहे है यह समाजशास्त्रीय शोध का विषय है।

अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता उनकी निर्णयन क्षमता, स्वास्थ्य, समाज में उनकी भागीदारी को किस प्रकार सुनिश्चित करती है इस विषय पर समाजशास्त्रीय अध्ययन किया जाना बहुत महत्वपूर्ण है। अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओ के सशक्तीकरण के मार्ग में आ रही बाधाओं एवं समस्याओं को समझना अति आवश्क है ताकि इन समस्याओं को दूर कर उनके

Scanned by CamScanner

सशक्तीकरण को और प्रभावी बनाया जा सकें। इस दृष्टिकोण से प्रस्तावित शोध कार्य महत्वूपर्ण सिद्ध होगा।

प्रस्तावित शोध कार्य ''जयपुर शहर में अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं में सशक्तीकरण'' पर केन्द्रित है। इस शोध कार्य द्वारा अनुसूचित जनजातियों की कामकाजी महिलाओं के सशक्तीकरण की प्रक्रिया के बारे हमें वास्तविक एवं महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त होगे जिनके आधार पर इस शोध कार्य की विषयगत उपादेयता एंव अकादमिक महत्व होगा।

<u>प्रस्तावित शोध के उद्देश्य:</u> (Objectives of proposed research)

किसी भी सामाजिक अनुसंधान का प्रमुख उद्देश्य समाज के बारे में ज्ञान की वृद्धि करना होता है। सामाजिक अनुसंधान के उद्देश्यों को सैद्धान्तिक व व्यवहारिक उद्देश्यों में विभाजित किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध विषय से संबंधित शोध ग्रंथो को आधार मानकर इस शोध कार्य के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये है:–

1. अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं की बदलती सामाजिक, आर्थिक प्रस्थिति का अध्ययन करना।
2. महिला सशक्तीकरण के विभिन्न मापक स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार आदि का मूल्यांकन करना।
3. अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं की विभिन्न समस्याओं की प्रकृति व स्वरूप ज्ञात करना एवं इन समस्याओं के प्रति उनकी जागरूकता की जानकारी प्राप्त करना।
4. अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं के परिवार में विवाह, बच्चों, सम्पत्ति, नौकरी आदि विषयों पर निर्णय लेने की स्वतंत्रता के बारे में अध्ययन करना।
5. अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं की महिला सशक्तीकरण के विभिन्न कार्यक्रमों एवं विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों के बारे में जानकारी एवं सहभागिता का अध्ययन करना।

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध विषय पर पूर्व में हुए शोध कार्यो का पुनरावलोकनः–

(Review of the work already done on the subject proposed research study)

किसी भी शोध विषय से सम्बन्धित पूर्व में किए गए अध्ययनों एवं उपलब्ध साहित्य का पुरावलोकन एक महत्वपूर्ण कार्य है। शोध से संबंधित पूर्व ज्ञान का अवलोकन शोध को सही दिशा में संचालित करने के लिए अपरिहार्य है। प्रस्तावित शोध विषय से संबंधित निम्न साहित्य का पुनरावलोकन किया गया है:–

1. शम्भूलाल दोषी एवं डॉ. नरेन्द्र एन.व्यास ने पुस्तक "राजस्थान की अनुसूचित जनजातियाँ" (1992) में राजस्थान प्रदेश में पायी जाने वाली जनजातियों पर विस्तार से चर्चा की है। पुस्तक में आदिवासियों की समकालीन स्थिति का उल्लेख करते हुये आदिवासी विकास के लिये किये गये विभिन्न कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला गया है। लेखक ने राजस्थान की प्रमुख जनजातियाँ–भील, मीणा, गरासिया, डामोर, सहरियां आदि की विभिन्न विशेषताओं – भाषा, बसावट, संगठन, पोशाक, खान पान, परिवार, नातेदारी, गोत्र, विवाह, त्यौहार, मेले, अर्थव्यवस्था आदि का विस्तृत विवेचन किया है।
2. प्रकाश चन्द्र मेहता ने अपनी पुस्तक "भारत के आदिवासी" (1993) में भारत में पायी जाने वाली अनुसूचित जनजातियों के निवास क्षेत्रों तथा उनका जनसंख्यात्मक विश्लेषण किया है। पुस्तक में आदिवासियों के लिये विभिन्न सुरक्षात्मक प्रावधानों पर प्रकाश डाला गया है और राजस्थान में जनजातियों के विकास के लिये विभिन्न क्षेत्रों में की गयी प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में बताया है। लेखक ने राजस्थान में निवास करने वाली प्रमुख जनजातियों–मीणा, भील, सहरिया, गरासिया, डामोर की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की है।
3. प्रकाश चन्द्र जैन और मधुसुदन त्रिवेदी ने अपनी पुस्तक "आदिवासी विकास की योजनाऐं (दशा और दिशा)" (1996) में आदिवासियों के विकास की विभिन्न स्थितियों का उल्लेख किया है। पुस्तक में बताया गया है कि आदिवासियों में भी उच्च तथा मध्यम वर्ग के आदिवासियों ने संवैधानिक सुविधाओं तथा सुरक्षा का अधिक लाभ प्राप्त किया है जबकि पद – दलित आदिवासी अभी भी विकास की दिशा में काफी पिछड़े हुये है। लेखक ने आदिवासियों के सम्पूर्ण विकास के एजेन्डा पर भी प्रकाश डाला है।

Scanned by CamScanner

4. हरिशचन्द्र उप्रेती ने "भारतीय जनजातियाँ संरचना एवं विकास" (2000) में जनजातीय समाजों की संरचना एवं विकास के विभिन्न पहलुओं का विशद् वर्णन किया है। पुस्तक में जनजातीय संस्कृति, कला, आर्थिक प्रणाली, नातेदारी एवं गौत्र व्यवस्था, धर्म एवं जादू आदि पर प्रकाश डाला गया है। लेखक ने जनजातीय महिलाओं की बदलती हुई स्थिति एवं विभिन्न जनजातीय विकास कार्यक्रमों तथा उनके प्रभावों का वर्णन किया है। पुस्तक में आदिवासी समाजों की विभिन्न समस्याओं तथा उनके संभावित समाधानों पर भी प्रकाश डाला गया है और भारत में जनजातीय आंदोलनों की भी चर्चा की गयी है।

5. सुभाष चन्द्र गुप्ता ने "कार्यशील महिलाएँ एवं भारतीय समाज" (2004) विषय पर शोध कार्य किया। इस शोध कार्य में उन्होंने महिलाओं द्वारा व्यवसायिक क्षेत्र में आने से उत्पन्न पारिवारिक असंगतियों तथा उनके कारणों का अध्ययन किया है। ये पारिवारिक असंगतियाँ महिलाओं की व्यवसायिक भूमिकाओं को किस प्रकार प्रभावित कर रही है इस पर भी शोधकर्ता द्वारा विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला गया है। शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य के निष्कर्ष में यह पाया कि महिलाओं द्वारा नौकरी करने के कारण पारिवारिक जीवन में तनाव उत्पन्न हुआ है जिसके कारण परिवार में असंगतियाँ उत्पन्न हो गयी है और जिनका प्रभाव उनके कार्यकारी संबंधों पर भी पड़ता है। अध्ययन में निष्कर्ष रूप में यह भी पाया गया है कि अधिकांश कार्यरत महिलाओं द्वारा परिवार तथा व्यावसाय की दोहरी भूमिकांए सफलतापूर्वक निभाना कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में उनके सामने भूमिका संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अंत में शोधकर्ता ने इन पारिवारिक असंगतियों को किस प्रकार दूर किया जाये तथा दोहरी भूमिकाओं में किस प्रकार सामंजस्य स्थापित किया जाये इसके संबंध में सुझाव प्रस्तुत किये है।

6. सावलिया बिहारी वर्मा, डॉ. एम.एल.सोनी और डॉ. संजीव गुप्ता ने "महिला जागृति और सशक्तीकरण" (2005) में महिला सशक्तीकरण के विभिन्न आयामों का विस्तार से वर्णन किया है। पुस्तक में महिला सशक्तीकरण में पंचायती राज की भूमिका की चर्चा की गई है। महिला सशक्तीकरण के लिए आवश्यक मानदण्ड शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला है। लेखक ने महिला स्वास्थ्य के सामाजिक आयामों तथा ग्रामीण विकास द्वारा महिलाओं की स्थिति में आये परिवर्तनों को दर्शाया है। पुस्तक में महिला जागृति एंव महिला सशक्तीकरण के लिये बनाये गये विभिन्न कानूनों तथा उनकी प्रभाविता का उल्लेख किया गया है।

7. प्रभावती जडिय़ा ने "हिन्दू नारी : कार्यशीलता के बदलते आयाम" (2007) में भारतीय समाज में महिलाओं की बदलती प्रस्थिति का विस्तार से वर्णन

Scanned by CamScanner

किया है। लेखका ने आदिकाल से लेकर वर्तमान तक कार्यशील महिलाओं की स्थिति का तथ्यपरक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। पुस्तक में कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका के साथ साथ भूमिका सांमजस्य की समस्या पर भी चर्चा की गयी है।

8. मंजू शर्मा ने अपनी पुस्तक "कार्यशील महिलाओं का समाज में बदलाव स्वरूप" (2008) समाज में महिलाओं के बदलते स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए महिला विकास हेतु संचालित विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों का उल्लेख किया है। पुस्तक में कार्यशील महिलाओं के विकास और उनकी विभिन्न समस्याओं की चर्चा की गयी है। लेखिका ने कार्यशील महिलाओं की परिवार तथा कार्यक्षेत्र से संबंधित दोहरी भूमिका पर भी प्रकाश डाला है।

9. करूणा पाण्डेय ने "जाति, वर्ग और महिला: भेदभावों की नई दिशा" (2008) विषय पर जयपुर जिले में अध्ययन कार्य किया। लेखिका ने अध्ययन की समस्या के रूप में पुरूष तथा स्त्री के जेण्डर सम्बन्धों को सम्पूर्ण जीवन शैली में अर्थात् जाति और वर्ग के संदर्भ में अध्ययन किया है। उन्होंने जातियों को तीन श्रेणियों में उच्च, मध्यम तथा निम्न जातियो में विभाजित किया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि निम्न जाति की महिलाओं को जीवन शैली व जीवन अवसर दोनों में ही उच्च जाति की महिलाओं की अपेक्षा कम सुविधाऐं प्राप्त है। निम्न तथा मध्यम जातियों में महिलाओं का संबंध जातिगत जीविकाओं तथा व्यवसाय से जुडा है निम्न जाति की शिक्षित महिलाओं को नये व्यवसायों के अवसर मिलने लगे है पर ये उच्च जाति की महिलाओं को मिलने वाले अवसरों की तुलना में कम है। अध्ययन में यह पाया गया है कि सभी लोग महिलाओं की प्रगति के समर्थक थे लेकिन महिलाओं के अधिकारों के बारे में अधिकांश उत्तरदाताओं ने महिलाओं की प्रस्थिति के प्रति पारम्परिक दृष्टिकोण का समर्थन किया।

10. मानचन्द खण्डेला ने अपनी पुस्तक "महिला सशक्तीकरण" (2008) में महिला सशक्तीकरण की अवधारणा तथा महिला मुक्ति की यथार्थता पर प्रकाश डाला हे। पुस्तक में विभिन्न सामाजिक परिवर्तनों का महिला विकास पर पडने वाले प्रभावों का उल्लेख किया गया है। लेखक ने महिला हितों के लिए बने सरंक्षण कानूनों कीं चर्चा भी की है। पुस्तक में राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर बने आयोगों के क्रियाकलापों व विभिन्न समस्याओं का सरल एवं वस्तुनिष्ठ विश्लेषण किया गया है।

11. मंजू शर्मा ने "भारतीय समाज में महिलाओं का विकास" (2008) में भारतीय समाज में महिला विकास के विभिन्न प्रतिमानों का वर्णन किया है। पुस्तक में महिला विकास के कार्यक्रमों तथा राष्ट्र के विकास में महिलाओं का योगदान की चर्चा की गई है। लेखिका ने महिलाओं के

Scanned by CamScanner

शोषण तथा महिला अपराध पर भी प्रकाश डाला है। आरक्षण के महिला विकास पर पडने पर पडने वाले प्रभावों का उल्लेख पुस्तक में किया है।

12. मंजू शर्मा ने "भारत में सामाजिक संरचना एवं जनजातियाँ" (2009) में भारतीय समाज में जनजातियों की सरंचना का विस्तृत वर्णन किया है। पुस्तक में जनजातियों की पारिवारिक संरचना, नातेदारी, धर्म, कला आदि का उल्लेख किया गया है। लेखिका ने जनजातियों के वर्गीकरण तथा प्रादेशिक जनजातियों पर भी प्रकाश डाला है। पुस्तक में आदिवासी महिलाओं की स्थिति एवं जनजातियों के आर्थिक पहलुओं पर भी चर्चा की गयी है।

13. इन्दु शर्मा और डॉ. शिवाली अग्रवाल ने "महिला सशक्तीकरण के नवीन आयाम' (सामाजिक राजनीतिक व आर्थिक परिप्रेक्ष्य में)" (2011) में महिला सशक्तीकरण की बहुआयामी प्रक्रिया एवं विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला है। पुस्तक में महिला सशक्तीकरण से जुड़े मिथकों की चर्चा करते हुए महिलाओं की वास्तविक स्थिति को उजागर किया गया है। लेखिका ने महिला अधिकारों का उल्लेख करते हुए सशक्तीकरण में इनके वास्तविक योगदान की चर्चा की है। पुस्तक में महिलाओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त की गई उपलब्धियों का भी वर्णन किया गया है जो काफी सीमित है।

14. निशांत सिंह ने "स्त्री सशक्तीकरणः एक मूल्यांकन" (2011) में स्त्री सशक्तीकरण के अर्थ की विस्तार पूर्वक व्याख्या की है। पुस्तक में स्त्री सशक्तीकरण से जुड़े विभिन्न पक्षों यथा राजनीति, शिक्षा, घरेलू हिंसा, अपराध आदि पर प्रकाश डाला गया है। लेखक ने महिला सशक्तीकरण के विभिन्न कार्यक्रमों का उल्लेख करते हुये महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में आ रही विभिन्न कठिनाईयों पर भी प्रकाश डाला है। सशक्तीकरण के महत्वपूर्ण सुझाव भी पुस्तक में प्रस्तुत किये गये है।

15. नीरा देसाई एवं उषा ठक्कर ने "वीमेन इन इण्डियन सोसायटी" (2011) में महिला प्रस्थिति में आये विभिन्न परिवर्तनों का ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत किया है। महिलाओं की विभिन्न क्षेत्रों में सहभागिता बढ़ी है। पुस्तक में महिलाओं की प्रस्थिति में आये सकारात्मक परिवर्तनों के साथ नकारात्मक पक्षों की भी चर्चा की गई है जैसे असंतुलित लिगांनुपात, महिलाओं के विरूद्व बढ़ते अपराध, विज्ञापन जगत में महिलाओं की बिगड़ती छवि आदि पर प्रकाश डाला गया है

Scanned by CamScanner

16. उदव तुकाराम भंडारे ने अपनी पुस्तक ''अनुसूचित जनजाति एवं महिला उत्पीडन'' (2014) में भारत में अनुसूचित जनजातियों की स्थिति एवं जनजातियों के सामाजिक संगठन पर प्रकाश डाला है। लेखक ने अनुसूचित जनजाति समाज में महिलाओं की स्थिति एवं जनजातीय विकास में पंचवर्षीय योजनाओं के योगदान की चर्चा की है और साथ ही भारतीय समाज में महिलाओं की परिवर्तित होती स्थिति एंव महिला उत्पीडन का भी उल्लेख किया है।

17. इला आर भट्ट ने अपने लेख ''महिलाओं का आर्थिक सशक्तीकरण'' (2016) में समाज के आर्थिक विकास के लिए महिलाओं का आर्थिक सशक्तीकरण आवश्यक माना है। लेखिका के अनुसार महिलाएँ ही सामुदायिक पुनर्निर्माण की कुंजी है। महिलाओं में रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं किसी भी समस्या का सतत समाधान करने की अद्‌भूत क्षमता होती है। लेख में महिलाओं की क्षमता को बढ़ायें जाने पर जोर दिया गया है, ताकि वे स्थानीय तथा वैश्विक स्तर के मुख्यधारा के बाजारों में प्रवेश कर पाये। लेखिका का मानना है कि किसी भी आर्थिक सुधार विशेषकर मूलभूत रोजगार के प्रमुख क्षेत्रो के सुधार केन्द्रों में गरीब महिलाओं को प्राथमिकता दी जाये। जिससे महिला सशक्तीकरण के लक्ष्य को यथार्थ रूप से प्राप्त किया जा सकें।

18. रमा शर्मा और एम.के.मिश्रा ने अपनी पुस्तक ''महिला सशक्तीकरण'' (2016) में महिला के विभिन्न स्वरूपों का प्रकाश डाला। इसमें संविधान में वर्णित महिलाओं से संबंधित विभिन्न कानूनों का उल्लेख करते हुए नारी उत्थान में इनकी भूमिका के बारे में बताया है। पुस्तक में शिक्षा को महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम बताते हुए सशक्तीकरण में इसके योगदान की चर्चा की है।

19. कमला भसीन ने अपने लेख ''भारतीय संदर्भ में नारी सशक्तीकरण'' (2016) में भारतीय समाज में महिलाओं की निम्न स्थिति के कारणों की चर्चा की है। लेख में महिला सशक्तीकरण को एक बहुआयामी प्रक्रिया बताया है। लेखिका ने महिला सशक्तीकरण के साधनों की चर्चा करते हुए शिक्षा को सशक्तीकरण का प्रमुख माध्यम बताया है। हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो महिलाओं को तेजी से बदलती हुई विश्व की वास्तविकताओं को समझने के लिये आवश्यक विश्लेषणात्मक कौशल हासिल करने में मदद करें तथा जो उन्हें अपमानपूर्ण तथा अमानवीय स्थितियों का विरोध करने का विश्वास एवं क्षमता प्रदान करें।

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध में शोध अन्तराल की पहचान :–

(Research gap identified in the proposed field of Research)

वर्तमान में महिला सशक्तीकरण का मुद्दा ज्वलंत एवं महत्वपूर्ण है। विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा इस दिशा में प्रयास किये जा रहे है। इन विभिन्न प्रयासों का महिला सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। महिला सशक्तीकरण से जुड़े विभिन्न पक्षों से संबंधित शोध कार्य किये गये है परन्तु अनुसूचित जनजाति की महिलाओं से संबंधित शोध कार्यों की संख्या अधिक नही है।

विभिन्न सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव अनुसूचित जनजाति की महिलाओं पर पड़ा है। अब वे शिक्षा ग्रहण कर परम्परागत व्यवसाय को छोडकर आधुनिक व्यवसाय अपना रही है जो कि सशक्तीकरण का प्रमुख आधार है। अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाएँ अब आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही है और सशक्तीकरण की दिशा में आगे बढ़ रही है। चूँकि कामकाजी महिला से संबंधित अधिकांश शोध कार्य उनके परिवार व व्यवसाय के बीच सामंजस्य से सम्बन्धित है और अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं से सम्बन्धित अध्ययनों की कमी है। प्रस्तुत शोधकार्य इस अन्तराल को भरने के लिये उपयुक्त है। अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं की सशक्तीकरण की स्थिति क्या है। क्या अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिला की प्रस्थिति उनके सशक्तीकरण की दिशा में सकरात्मक प्रभाव डाल रही है। इन सब तथ्यों की जानकारी प्रस्तावित शोध कार्य में प्राप्त की जायेगी।

Scanned by CamScanner

उपकल्पना / शोध प्रश्नः–

(Hypothesis)

उपकल्पना किसी भी शोध कार्य में प्रमुख भूमिका रखती है। उपकल्पना शोध कार्य को आवश्यक दिशा देने का कार्ब करती है। प्रस्तावित शोध कार्य से संबंधित प्रमुख उपकल्पनाएँ अथवा शोध प्रश्न निम्नानुसार हैः .

1. अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक प्रस्थिति में बदलाव आया हैं।
2. आर्थिक आत्मनिर्भरता के कारण परिवार से संबंधित मामलों में निर्णय लेने की स्वतंत्रता में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आया हैं।
3. अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं की विभिन्न सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता बढी हैं।
4. अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं में भूमिका सामंजस्य की समस्या उत्पन्न हुई हैं।
5. अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं की महिला सशक्तीकरण के कार्यक्रमों एवं सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में सहभागिता बढी है।

शोध पद्धति :– (Research methodology)

किसी भी शोधकार्य की सफलता के लिए एक निश्चित शोध पद्धति का होना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध अनुसूचित जनजाति की काम़काजी महिलाओं में सशक्तीकरण के एक समाजशास्त्रीय अध्ययन कर केन्द्रित है। इस शोध कार्य के लिये राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के शहरी क्षेत्र कों अध्ययन क्षेत्र के रूप में चुना गया है।

इस शोध कार्य हेतु विभिन्न सरकारी एवं निजी क्षेत्र में कार्यरत अनुसूचित जनजाति की महिलाओं को उत्तरदाता के रूप में चुना जायेगा। अध्ययन के लिये उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के माध्यम से 200 उत्तरदाताओं का चयन किया जायेगा ताकि अध्ययन में गहनता प्राप्त की जा सकें।

Scanned by CamScanner

अध्ययन क्षेत्र

शोध के लिये अध्ययन क्षेत्र के रूप में जयपुर शहर को चुना गया है। जयपुर शहर के 2 जोन से 200 उत्तरदाताओं का चयन निम्न प्रकार किया जायेगा।

क.सं.	जोन का नाम	कुल वार्ड	उत्तरदाताओं की संख्या
1.	संगानेर	12	100
2.	हवामहल (पूर्व)	11	100

अध्ययन प्रविधियाँ :–

प्रस्तावित शोध में तथ्य संकलन के प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों का उपयोग किया जायेगा जो निम्न प्रकार है:–

1. प्राथमिक तथ्यों का संकलन करने के लिये साक्षात्कार अनुसूची, औपचारिक एवं अनौपचारिक साक्षात्कार, अवलोकन आदि का उपयोग किया जायेगा।

2. द्वितीयक तथ्यों का संकलन करने के लिये सम्बन्धित पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, प्रकाशित शोध पत्रो, जर्नल आदि की सहायता ली जायेगी।

उपर्युक्त प्रविधियों द्वारा उत्तरदाताओं से प्राप्त तथ्यों का प्रस्तुतिकरण सारणीयन, चार्ट, मानचित्र आदि के द्वारा किया जायेगा। प्राप्त सूचनाओं का सांख्यकीय विश्लेषण कर निष्कर्ष प्राप्त किये जायेंगे। इन निष्कर्षों के आधार पर सामान्यीकरण किया जायेगा।

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित अनुसंधान की अध्याय योजनाः–

प्रथम	:	जनजाति एवं महिला सशक्तीकरण के अवधारणात्मक पहलू
द्वितीय	:	शोध प्रारूप एवं शोध पद्धति
तृतीय	:	अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन।
चतुर्थ	:	अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं की सामाजिक सशक्तीकरण की स्थिति का अध्ययन।
पंचम	:	अनुसूचित जनजाति की कामकाजी महिलाओं की समस्याओं का अध्ययन।
षष्ठम	:	निष्कर्ष एवं सुझाव
		संदर्भ ग्रन्थ सूची

* तथ्यों की प्राप्ति के पश्चात उपर्युक्त अध्याय योजना को आवश्यकतानुसार परिवर्तित किया जा सकता है।

Scanned by CamScanner

संदर्भ ग्रन्थ सूची

(BIBLIOGRAPHY)

1. Baig, Tara, Ali, "Women of India", Publication, division GOI, New Delhi, 1958.
2. Chattopadhay, Kamla Devi, "Tribalin India" Vikas Prakashan, New Delhi, 1978.
3. Desai, Neera and Thakkar, Usha, "Women in Indian Society", National book trust India, New Delhi, 2001.
4. Doshi, S.L, "Tribal Ethnicity. Class and Integation", Rawat Publication, Jaipur, 1990.
5. Doshi, shambhulal and Vyas, Narendra, N. "Rajasthan ki Anusuchit Janjatiya", Himanshu Publication, Udaipur, 1992.
6. Ghurge, G.S. "The scheduled Tribes", Popular Prakashan, Bombay, 1995.
7. Guha, B.S., "Bharat Ke Adivasi Sankshikt Parichay", Prakashan Vibhag, Bharat Sarkar, New Delhi, 1959
8. Gupta, S.C. "Working women and Indian Society", Arjun Publishing House, New Delhi, 2004.
9. Hasnain, Nadim, "Tribal India Today" Harnam Publications, 1983.
10. Jadiya, Prabhavati, "Hindu Nạri: Karyshilata ke badalte Aayam", Arjun Pubshing House, New Delhi, 2017.
11. Jain, P.C. and trivedi, Madhushudan, "Adivasi Vikas yojanay: dhasha and Dhisha", Shiva Publication Destributers, Udaipur, 1996

Scanned by CamScanner

12. Jain, P.C., "Devlopment among tribals, "Rawat Publication, Jaipur, 1999

13. Joshi, S.C. " Women Empowerment Myth and Reality ", Akash Publishing House, New Delhi, 2004.

14. Mehta Prakash, Candra, "Bharat Ke Aadivasi", Shiva Publication Distributers, Udaipur, 1993.

15. Panday Karna, " Caste Class and women: A new direction of discrimination", national publicshing House, Jaipur, 2008.

16. Pareek Disha, " Nari Vimasrsha", sankalp Prakashan, Jaipur, 2013

17. Parvrthamma, C. "Anusuchit Jatiya aur Janjatiya," Aashish Publishing House, New Delhi, 1984.

18. Sharma, Indu and Agrawal Shivali." Mahila Sashaktikaran Ke Navin Aayam", Radha Publications, New Delhi, 2011.

19. Sharma, Manju, "Karyshil Mahilao Ka Samaj me Badalta Svaroop, "Raj Publishing House, Jaipur,2008

20. Sharma, Manju, "Bharat me Janjatiya aur Samajik Sanrachna", Raj Publishing House, Jaipur 2009.

21. Sharma, Rama and Mishra, M.KI. "Mahila Sashaktikaran", Arjun Publishing House, New Delhi, 2016

22. Sharma, Virendra Prakash, "Research Methodology", Panchsheel Publication, Jaipur, 2010.

23. Shashi, S.S. "The tribal Women of India", Sandeep Prakashan, New Delhi, 1978.

Scanned by CamScanner

24. Singh, Nishant, "Mahila Sashaktikaran," Khushi Publication, New Delhi, 2011.

25. Singh, Nishnat, Minakshi, "Mahila Sashaktikaran Ka Sach", Omega Publication, New Delhi, 2006.

26. Tivari, S.K. "Tribes of India", Nourthen Book Center, New Delhi, 1992.

27. Trivedi, R.N. and shukla, D.P., "Research Methodology" college book depot, Jaipur, 2013.

28. Tukaram, Udhaw Bhandhare, Anusuchit Jangati aur Mahila Utpidan" Axis book Publishers, New Delhi, 2014.

29. Upreti, H.C., "Bharatiya Janjatiya: Sanrachana aur Vikas, Rajasthan Hindu Grantha Akadmi, Jaipur, 2007.

30. Verma, S.B, Soni, M.L and Gupta, Sanjeev "Mahila Jagrati aur Sashaktikaran." Aavishkar Publishares, distributers, Jaipur, 2005.

Scanned by CamScanner

समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ

1. कादम्बिनी
2. कुरुक्षेत्र
3. जनसत्ता
4. द हिन्दू
5. दैनिक जागरण
6. दैनिक नवज्योति
7. पंजाब केसरी
8. प्रतियोगिता दर्पण
9. योजना
10. राजस्थान पत्रिका

INTERNET :-

1) www.shodhgangotri.com
2) www.eb.com
3) www.shodhganga.com
4) www.bookwire.com

Scanned by CamScanner